इकाई 19 साम्राज्य और राष्ट्र-राज्य-1: औटोमन और हैब्सबर्ग साम्राज्य

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- दो बड़े बहुजातीय साम्राज्यों – औटोमन और हैब्सबर्ग–के संघटन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- इन साम्राज्यों के आंतरिक अन्तरविरोध और तनावों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे;
- यह जान सकेंगे कि किस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के साथ-साथ राष्ट्रवाद के विकास के कारण इन साम्राज्यों का पतन हुआ।

19.1 प्रस्तावना

जैसा कि आप पहले देख चुके हैं राष्ट्र-राज्य एक नया सांस्कृतिक और राज्य-क्षेत्रीय रूप था जिसमें यूरोप में आधुनिक राज्य की स्थापना की गई थी और जिसके जरिए यूरोप की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति को पुनर्संगठित किया गया था। नेता यथावत बने रहे मसलन, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी। इनके साथ-साथ कम महत्वपूर्ण लेकिन तेजी से आधुनिकीकृत होती शक्तियां भी मौजूद थीं जैसे स्कैनडिनेविया, हौलैंड, बेल्जियम, इटली, स्पेन और पुर्तगाल। प्रथम विश्व युद्ध में ध्वस्त होने तक यूरोप के तीन बड़े साम्राज्यों ने इन प्रवृत्तियों को रोकने की कोशिश की। ये तीन बड़े साम्राज्य थे रूसी, हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्य।

इन साम्राज्यों में कई संभावित राष्ट्र निहित थे जो पूर्व-आधुनिक समय के राजवंशीय साम्राज्यों में शामिल थे। इन साम्राज्यों का अस्तित्व राष्ट्रीय आंदोलनों को दबाए रखने में निहित था जबकि उन्होंने अन्य मामलों में अपने राज्यों और सामाजों को आधुनिकीकृत किया था। परंतु आधुनिकता के आगमन से एक के बाद दूसरे क्षेत्र में लगभग अपने आप राष्ट्रवाद का उदय हुआ। निश्चित रूप से इन राष्ट्रीय आंदोलनों ने अन्तरराष्ट्रीय

सहयोग चाहा और बड़ी शक्तियों ने स्वभावतः जब उनके अन्तरराष्ट्रीय कूटनीति और युद्ध के अनुकूल साबित हुआ तब राष्ट्रवादों को प्रोत्साहित किया।

इन परिस्थितियों में राष्ट्र-राज्य एक उग्र सुधारवादी आधुनिक व्यवस्था प्रतीत होती है और बहुभाषी ढांचा जो इन राष्ट्रों को एक राजनैतिक व्यवस्था में गूंथने का प्रयत्न करता है, पुरातन प्रतीत होता है। इन तीनों राजवंशी साम्राज्यों में यूरोप के अधिकांश पिछड़े हिस्से शामिल थे। प्रत्येक सैनिक पराजय के बाद विखंडन की प्रक्रियाएं चलती रहीं और अन्ततः प्रथम विश्व युद्ध ने अंतिम आघात किया और उनसे टूटकर राष्ट्र-राज्य अलग हुए।

19.2 राष्ट्रवाद और साम्राज्य

परंतु यह कहना इतना सरल नहीं है कि राष्ट्र-राज्य आधुनिकता के प्रतीक हैं साम्राज्य पिछड़ेपन का। जैसा कि हम जानते हैं 1919 के बाद यूरोप में उभरने वाले कई राष्ट्र-राज्य यूरोप के पिछड़े हिस्से बने रहे और सोवियत संघ का नया बहु-राष्ट्रीय राज्य जो पुराने रूसी साम्राज्य को हटाकर स्थापित हुआ पिछड़ा हुआ नहीं था। उसने द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी को परास्त किया और महाशक्ति बन गया। बालकन में युगोस्लाविया एक बहु राष्ट्र-राज्य था और मध्य यूरोप में दूसरा बहु राष्ट्र-राज्य चेकोस्लोवाकिया था। स्वीटजरलैंड ने भी आधुनिक दुनिया में बहु राष्ट्र संघ के रूप में ही कदम रखा था। **वस्तुतः राष्ट्र-राज्य आधनिुक नहीं होता बल्कि राष्ट्रवाद, जिस पर वह आधारित होता है, आधुनिक है**। यदि बहु राष्ट्र-राज्य में भी राष्ट्रवाद पनपता है तो वह भी उतना ही आधुनिक होगा। सोवियत संघ इसका उत्तम और उज्जवल उदाहरण है। परंतु छोटे राष्ट्र-राज्यों को भी नही भूलना चाहिए।

ये तीनों साम्राज्य इस दृष्टि से पुरातन और दुर्बल थे क्योंकि साम्राज्यवादी राज्य ने राष्ट्रवाद को पनपने नहीं दिया था। 19वीं शताब्दी के आरंभ से अलग-अलग मात्रा में इन सभी साम्राज्यों में राष्ट्रवाद पनपने लगा था। परंतु राज्य पूरे साम्राज्य को राजवंश, सेना और नौकरशाही के जरिए एक रखने का प्रयत्न कर रहा था और किसी भी आम विचारधारा, धर्म, भाषा या संस्थाओं को आधार नहीं बनाया जा रहा था। सिद्धांततः साम्राज्य एक राष्ट्र के रूप में रूपांतरित किया जा सकता है। जैसे कि इंगलैंड, वेल्स, स्कॉटलैंड और आयरलैंड को मिलाकर ग्रेट ब्रिटेन का निर्माण हुआ था। परंतु ब्रिटिश विकास में प्रगति के लक्षण मौजूद थे जिसमें शामिल होने में दूसरे राष्ट्र अपना लाभ देखते थे। निश्चित रूप से इस संघ में इंगलैंड का वर्चस्व था। दूसरी ओर आयरलैंड में होने वाले दंगे ब्रिटिश राष्ट्र की असफलता का प्रमाण थे और इस बात के द्योतक थे कि साम्राज्य को प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हालांकि ब्रिटेन से अलग इन साम्राज्यों में दर्जनों ऐसे क्षेत्र थे जिनमें ब्रिटेन की अपेक्षा ज्यादा विविधता थी। इसके अलावा ये साम्राज्य पिछड़ेपन और अल्प विकास की समस्याओं से बुरी तरह जूझ रहे थे और अन्ततः कई क्षेत्रों में एक साम्राज्यवादी राष्ट्र के रूप में प्रदर्शित करने के लिए राष्ट्रवादी विचारधाराओं को लोकप्रिय बनाया गया। हालांकि इन रणनीतियों की शुरुआत रूसी राष्ट्रवाद और रूसी साम्राज्य के रूसीकरण, औटोमन साम्राज्य के औटोमीकरण और हैब्सबर्ग राजतंत्र में राष्ट्रीय केंद्रीकरण के रूप में देखा जा सकता है।

राष्ट्रवाद की एक दूसरी सैद्धांतिक संभावना भी हो सकती है। पश्चिम यूरोप की तरह एक राष्ट्र-राज्य निर्मित किए बिना राष्ट्रवाद आधुनिक राज्य का आधार बन सकता है। सोवियत और युगोस्लाव बहु राष्ट्र नमूना इसका एक उदाहरण है जो 1990-91 तक कायम रहा। नए सोवियत राज्य ने 1920 के दशक में जमकर राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया और साथ ही साथ उन्हें एक साम्यवादी राज्य में समाहित कर लिया। इस प्रकार यह नया राज्य न तो राजवंश नौकरशाही मात्र पर आधारित पुराने ढंग का साम्राज्य था और न हीं एक मात्र संस्कृति और क्षेत्र वाला राष्ट्र-राज्य। इसकी बजाए कई ऐसे राष्ट्र विकसित हुए जिनमें राष्ट्र-राज्य के सभी लक्षण मौजूद थे परंतु उन्हें पूर्ण संप्रभुता नहीं प्राप्त थी; उन्हें एक सोवियत महा-देश या जिसे आमतौर पर बहु-राष्ट्रीय राज्य कहा जाता है में पिरो दिया गया; और इस महा-राष्ट्र को केंद्रीकृत साम्यवादी दल, साम्यवादी दर्शन, नियोजन, सेना, नौकरशाही और सोवियत संस्कृति के सूत्र से जोड़ा गया। इस प्रकार सोवियत व्यवस्था में न केवल राष्ट्रवाद को स्वीकृति दी गई बल्कि इसके लिए प्रयत्न भी किया गया परंतु यह काम राष्ट्र-राज्य के जरिए नहीं किया गया। इस प्रक्रिया से कुछ मिलता-जुलता उदाहरण भारतीय संघ है जिसमें 1956 में भाषाई राज्यों को पुनर्संगठित किया गया। इनमें से प्रत्येक की अपनी उप-राष्ट्रवादी या क्षेत्रीय आकांक्षाएं हैं।

ये तीन साम्राज्य बहु-राष्ट्रीय एकता की इन रणनीतियों को ग्रहण करने में असफल रहे। परिणामस्वरूप साम्राज्यवादी नीतियां अक्सर प्रतिक्रियावादी होती थीं और वे निम्नलिखित कार्यों में संलग्न होते थे: 1) संभावित राष्ट्रवाद को दबाना, 2) अवसर के अनुकूल एक मिश्रित राष्ट्रीयताओं वाले क्षेत्र में अथवा पड़ोसी क्षेत्र में रहने वाली विभिन्न राष्ट्रीयताओं में उभरने वाले राष्ट्रवाद को एक दूसरे के खिलाफ लड़ाना, 3) पड़ोस के साम्राज्य में कूटनीति, दुश्मनी और षडयंत्र के तहत राष्ट्रवाद को समर्थन देना। इन तीनों साम्राज्यों की असफलताओं को काफी हद तक राष्ट्रवादी रणनीति की असफलताओं के रूप में देखा जा सकता है और प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम को यूरोप में राष्ट्रवाद की विजय के रूप में देखा जा सकता है। सोवियत संघ भी इसका अपवाद नहीं है। जिस प्रकार राष्ट्र-राज्यों ने प्रभावी ढंग से राष्ट्रवाद को उदारवादी या फासीवादी विचारधारा से जोड़ दिया उसी प्रकार सोवियत संघ ने राष्ट्रवाद को साम्यवादी दर्शन के साथ मिला दिया।

इन साम्राज्यों के बीच राष्ट्रवाद से निपटने की दृष्टि से स्पष्ट अंतर था। पहला अंतर केंद्रीय राज्य में मौजूद संबद्धता की मात्रा में निहित था। इसमें रूसी राज्य प्रथम था, हैब्सबर्ग का स्थान उससे नीचे और औटोमन तीसरे स्थान पर था और उसे 'यूरोप के बीमार आदमी' की संज्ञा दी गई थी। दूसरा अंतर पहले से जुड़ा हुआ था; स्थानीय राष्ट्रवाद के अन्तरराष्ट्रीय समर्थन की मात्रा की दृष्टि से भी इनमें अंतर था। इसमें भी ऊपर का क्रम मौजूद था। तीसरा अंतर इस तथ्य में निहित था कि किस साम्राज्य में एक मात्र राष्ट्रीयता का वर्चस्व था। इसमें भी रूसी साम्राज्य का स्थान पहला था जहां रूसी (या अधिक से अधिक स्लाविक) राष्ट्रीयता का वर्चस्व था जबकि हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्य का स्थान बहुत पीछे था। अतएव औटोमन और हैब्सबर्ग साम्राज्यों के कई राष्ट्र-राज्यों में टूटने की प्रक्रिया में स्थानीय राष्ट्रवाद के साथ-साथ अन्तरराष्ट्रीय कूटनीति का भी हाथ था। परंतु युद्ध और क्रांति (1914-1921) के दौरान रूसी साम्राज्य के भीतर चलनेवाली गतिविधियां अपेक्षाकृत अन्तरराष्ट्रीय उठापटक से अछूती रहीं। इन अन्तरों से यह भी पता चलता है कि सोवियत बहु-राष्ट्रीय राज्य क्यों रूसी साम्राज्य के रूप में उभरने में सफल रहा (उत्तर पश्चिम में कुछ नुकसान हुआ)। जबकि इस प्रकार की अन्य बहु-राष्ट्रीय संरचनाएं दो अन्य साम्राज्यों में न उभर सकीं; उदाहरणस्वरूप पश्चिमी बालकन में युगोस्लाविया और मध्य यूरोप में चेकोस्लोवाकिया ।

19.3 औटोमन साम्राज्य

औटोमन साम्राज्य इन तीनों में सबसे कमजोर था। 17वीं शताब्दी के अंत से ही उसका सिकुड़ना आरंभ हो गया था। 1699 में कार्लोविज और 1718 में पासोरोविज की संधियों द्वारा हैब्सबर्ग साम्राज्य ने पश्चिमी बालकन क्षेत्र का काफी बड़ा हिस्सा पुनःप्राप्त कर लिया। पूरी 18वीं शताब्दी के दौरान इसका पतन होता रहा; रूसी साम्राज्य के आगे यह टिक न सका और हमेशा इलाका छोड़ता गया। 1774 में कुचुक कईनार्का की संधि के कारण औटोमन साम्राज्य काले सागर के उत्तर के क्षेत्रों से हाथ धो बैठा। रूसी साम्राज्य काले सागर के पश्चिमी तट और औटोमन क्षेत्र से होते हुए रोमानिया में प्रवेश कर गया। उस समय रोमानिया को मोल्डेविया और वैलेशिया नामक डेन्यूबियन प्रांतों के रूप में जाना जाता था। यह पूरब की ओर भी बढ़ा और आरमेनिया में काकेशियन पर्वत क्षेत्र तक पहुंच गया।

18वीं शताब्दी के अंत में पश्चिमी यूरोप के तीव्र औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के कारण भी औटोमन साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ। रूसी और हैब्सबर्ग साम्राज्यों में आधुनिकीकरण की कोशिशें की गईं। औटोमन साम्राज्य ने भी ऐसा करने का प्रयास किया। सुल्तान सलीम III, महमत II (1808-1839) और तंजीमात युग के दौरान (अब्दुल हमीद I, 1839-1861 और अब्दुल अजीज़ 1861-1879, का शासन काल) आधुनिकीकरण के प्रयास किए गए। परंतु रूसी और हैब्सबर्ग साम्राज्यों के तरह औटोमन साम्राज्य की संस्थाएं आधुनिकीकरण के प्रति बहुत उत्साहपूर्ण नहीं थीं और इस प्रकार साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन होता चला गया।

19वीं शताब्दी के आरंभ तक इस साम्राज्य ने क्षेत्रों के एक ढीले समूह का रूप ले लिया था जिस पर समय-समय पर विभिन्न समूहों, स्थानीय प्रसिद्ध व्यक्तियों और राष्ट्रवादियों, विद्रोही औटोमन राज्याध्यक्षों और पदाधिकारियों, पड़ोस के बालकन या भूमध्यसागरीय राज्यों और अन्ततः बड़ी शक्तियों का वर्चस्व रहा। परंतु प्रथम विश्व युद्ध के बाद यह पूरी तरह टूटा नहीं क्योंकि बड़ी शक्तियां इसके विभाजन को लेकर सहमत नहीं

थीं। परंतु बड़ी शक्तियां औटोमन साम्राज्य को अपने हिसाब से और अपने हित के लिए लगातार निर्मम तरीके से सौदेबाजी के तहत टुकड़ों में काटती रहीं। परंतु हर बार उन्होंने जो अंग काटा उससे राष्ट्र या उनसे मिलता जुलता स्वरूप सामने आया क्योंकि इन क्षेत्रों में राष्ट्र-राज्यों का उदय बड़ी शक्तियों की इच्छा पर आधारित नहीं था बल्कि इसका आधार उन सभी क्षेत्रों में राष्ट्रवाद का स्वतंत्र विकास था। परंतु किसी भी राष्ट्र का बिना किसी बड़ी शक्ति के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के स्वतंत्र रूप से उभरने का सवाल ही नहीं उठता था।

बड़ी शक्तियों ने हमेशा दो अन्तरविरोधी नीतियां अपनाईः उन्होंने केंद्रीय औटोमन राज्य को बनाए रखा और स्थानीय राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया। कई आक्रामक राष्ट्रवादी बालकन राज्यों से निपटने की अपेक्षा वे एक कमजोर औटोमन राज्य के साथ काम करना आसान समझते थे। इसलिए उन्होंने साम्राज्य को भंग करने की अपेक्षा धीरे-धीरे छोटा करना आरंभ किया। परंतु उनमें से प्रत्येक की एक स्वतंत्र क्षेत्रीय विस्तार की आकांक्षाएं भी थीं जिसके लिए प्रत्येक एक अलग राष्ट्र बनाने की योजना बनाता था और इसके लिए किसी एक स्थानीय राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करता था। इस प्रकार ब्रिटिश और फ्रांसीसियों ने मिस्र और अरब क्षेत्र पर अपनी लोलुप दृष्टि गड़ाई और 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मिस्र पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित हो गया। आस्ट्रिया, पश्चिमी बालकन खासकर स्लोवेनिया, क्रोएशिया और बोस्निया-हर्जिगोविना में अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था। ये सभी हिस्से बाद में युगोस्लाविया के हिस्से बने। रूसी आक्रमण के खिलाफ शेष बचे औटोमन साम्राज्य को बचाए रखने की कोशिश में हैब्सबर्ग साम्राज्य ने धीरे-धीरे और चुपके-चुपके कब्जा जमाने की नीति अपनाई।

रूस की महत्वाकांक्षा सबसे ज्यादा थी। पूरे बालकन क्षेत्र के स्लावियाई भाषा परिवार का अंग होने (रोमानिया के एक हिस्से को छोड़कर) और कट्टरपंथी धर्म, (सभी जगहों के मुसलमान और रोमन कैथोलिक क्रोयेशिया और स्लोवेनिया को छोड़कर) होने के कारण रूस अपने को इनके नेता और यहां के लोगों के संरक्षक होने का दावा कर सकता था। यह काम अखिल स्लावीय दर्शन के द्वारा किया गया जिसमें रूसी नेतृत्व में सभी स्लावों की एकता का आह्वान किया गया और औटोमन गुलामी की जंजीर को तोड़ फेंकने के लिए कहा गया। कई रूसी विचारधारात्मक समूहों ने तुर्की को छोड़कर बृहद बालकन स्थानीय परिसंघ का आकर्षक प्रस्ताव सामने रखा और इसका प्रचार भी किया परंतु यह रूसी राज्य की नीति नहीं थी। रूसी सरकार राजनीतिक और अन्य उद्देश्यों से बालकन की राजनीति को प्रभावित करने वाले साधनों की खोज में थी। कभी औटोमन सरकार के जरिए यह काम करना आसान होता था तो कभी किसी एक राष्ट्र-राज्य को समर्थन देना या इस राष्ट्र-राज्य के साथ भरोसेमंद समझौता किया जाना बेहतर उपाय होता था। वस्तुतः रूसी सरकार ने दोनों रास्ते अख्तियार किए इसलिए उसकी नीतियों में काफी उलझाव आ गया। इसके अलावा अति उत्साही राजनीतिज्ञों और सेनाध्यक्षों ने सरकार से अलग अपने निजी कार्यक्रमों और उद्देश्यों के लिए काम करना शुरू किया जिससे स्थिति और भी उलझनपूर्ण हो गई। परंतु कुल मिलाकर रूसी सरकार और अखिल स्लावीय आंदोलनों ने बालकन राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया और सर्बिया, बुल्गारिया और रोमानिया की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान दिया; हालांकि रूस के लिए राष्ट्रवाद बहुत सुरूचिपूर्ण नहीं था क्योंकि इससे अन्ततः रूसी साम्राज्य के अस्तित्व को ही खतरा था। हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्य को भी इसी विडम्बना का सामना करना पड़ा। ये साम्राज्य बालकन राष्ट्रवादों को एक दूसरे के खिलाफ लड़ाते थे और अन्ततः उन्हें ही राष्ट्रवाद से ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा।

19.3.1 ग्रीस

ग्रीस के लोगों ने पहली बार औटोमन बहु-राष्ट्रीय साम्राज्य के खोखलेपन का पर्दाफाश किया। अन्य स्वतंत्रता संग्रामों के समान उनकी आजादी की लड़ाई भी राष्ट्रवाद के तीन तथ्यों पर आधारित थी। साम्राज्यवादी राज्य का अपने स्थानीय राज्याध्यक्षों पर नियंत्रण नहीं था; वे बड़ी शक्तियों के हस्तक्षेप को रोक नहीं सकते थे। इसके अलावा बड़ी शक्तियों की प्रतिस्पर्द्धा का भी इसमें हाथ था। 18वीं शताब्दी के अंत में विद्वत और साहित्यिक मंडली ने अतीत की श्रेष्ठता और गौरव को उद्भाषित करते हुए ग्रीक राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार-प्रसार किया। रिगस फेरोस (Rhigas Pheraios) एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्रवादी कवि था जिसे 1798 में औटोमन साम्राज्य ने मृत्युदंड दे दिया था और वह एक प्रमुख शहीद बन गया। फिल्की हितारिया (मित्रों का समाज) स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाला एक ऐसा प्रमुख संगठन था। एलेक्जेंडर इप्सीलांती के नेतृत्व में

इसकी स्थापना 1814 में क्रिमिया में ग्रीक व्यापारियों ने की थी। इस काल में परम्परा और प्राचीनता की महिमा पूरे यूरोप में गाई जाने लगी थी इस कारण इसका अन्तरराष्ट्रीय प्रचार हुआ। परंतु रूस ने इसके राष्ट्रवाद को ठोस समर्थन प्रदान किया।

1770 में ही रूस ने पेलोपनीज में हुए विद्रोह को अपना समर्थन दिया था। 1774 में कुचुक कईनार्जी की संधि द्वारा रूस ने सुलतान के समक्ष साम्राज्य के कट्टरपंथी ईसाइयों का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। इसके बाद कई विद्रोह हुए परंतु 1821 में हुआ विद्रोह सबसे निर्णायक साबित हुआ जो तेजी से मोरिया, अइगन द्वीपों, एथेन्स, कोरिन्थ, थिसेली और मैसीडोनिया में फैल गया। जनीना (आधुनिक ग्रीस में आइओनीना) के अलिपाशा, जो औटोमन साम्राज्य के एक राज्याध्यक्ष थे, ने सुल्तान के खिलाफ बगावत का झंडा उठा लिया और ग्रीस में दक्षिण तक अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। ग्रीक राष्ट्रवादी और अलिपाशा थोड़े समय के लिए इस्तम्बूल के खिलाफ एकजुट हो गए। औटोमन सरकार ने अलिपाशा पर आक्रमण किया जो उनके लिए काफी खतरनाक साबित हो रहा था और उसे 1822 में मृत्यु दंड दे दिया गया। परंतु इसके द्वारा उन्होंने अनचाहे एक ऐसी एकमात्र राजनैतिक शक्ति को समाप्त कर दिया जो ग्रीक राष्ट्रवादियों पर नियंत्रण रख सकता था। ग्रीकों को दबाए जाने के कारण पूरे यूरोप में इस्लाम विरोधी माहौल बन गया और 1822 में ग्रीस की स्वाधीनता की घोषणा की गई। अब सुल्तान ने मिस्र के अपने शक्तिशाली गवर्नर मुहम्मद अली की सहायता मांगी जो अल्बानिया मूल का था और ग्रीस में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता था।

अब बालकन में नई स्थिति पैदा हो गई। रूस ने आत्मसमर्पण के लिए सुल्तान पर दबाव डाला। रूसी प्रभाव के बढ़ने के भय से ब्रिटेन और फ्रांस ने अलग-अलग मुहम्मद अली पर आक्रमण कर दिया और 1827 में नैवेरिनो खाड़ी के युद्ध में उसके बड़े जहाजी बेड़े को नष्ट कर दिया। रूसी भूमध्यसागरीय जहाजी बेड़े ने ग्रीकों को मदद पहुंचाई और रूस ने डैन्यूबियन प्रांतों (आधुनिक रोमानिया) और काकेशस से होकर औटोमन साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। औटोमन साम्राज्य की पराजय और 1829 में एडिरने (एड्रिओनोपल) की संधि के बाद ग्रीक स्वतंत्रता अन्तिम रूप से स्वीकार कर ली गई। 1832 में ग्रीक राज्य की स्थापना की गई परंतु रूसी प्रभाव को कम करने के लिए वहां एक जर्मन राजकुमार के नेतृत्व में इसका गठन किया गया जो धर्म से ग्रीक कट्टरपंथी नहीं बल्कि रोमन कैथोलिक था।

इसके परिणामस्वरूप रूस, आस्ट्रिया, ब्रिटेन, फ्रांस, सुल्तान, अलीपाशा और मुहम्मद अली सब एक साथ ग्रीस पर जूझ पड़े। सुल्तान ने सबसे पहले इस दौड़ से अलीपाशा को निकाल बाहर किया। इसके बाद रूस ने सुल्तान को हटाया जबकि ब्रिटेन और फ्रांस ने मुहम्मद अली का पत्ता साफ कर दिया। आस्ट्रिया ने चुपचाप ब्रिटेन और फ्रांस की कार्यवाई को स्वीकृति दे दी। उन्होंने मुख्य रूप से रूसी प्रभाव के डर से अंतिम रूप से एक ऐसे ग्रीस का निर्माण किया जो उनके राष्ट्रवादी सपने या आधुनिक ग्रीस से बहुत छोटा था। इसी कारण से धर्म और राष्ट्रीयता की दृष्टि से पूर्णतः एक विदेशी व्यक्ति को गद्दी पर बैठाया गया। इसके बाद अगले 150 सालों तक बालकन संकट जारी रहा और ग्रीस को अपना राज्य क्षेत्र फैलाने का मौका बड़े राष्ट्रों द्वारा दिया गया। **इसी प्रकार से प्रत्येक राष्ट्र-राज्य की शुरुआत न्यूनतम राज्य-क्षेत्र से हुई; बड़ी शक्तियों के टकराव में इन्होंने जिनका पक्ष लिया उसके पुरस्कार या दंड स्वरूप उनके राज्य-क्षेत्र में बढ़ोत्तरी या कमी होती रही।**

19.3.2 सर्बिया

सर्बियाई राष्ट्रीय आंदोलन में भी वही सारे तत्व मौजूद थे जैसे, औटोमन राज्य का पतन, स्थानीय शासकों और राष्ट्रवादियों के बीच क्षेत्रीय टकराव, रूसी संरक्षण और यूरोप की बड़ी शक्तियों की चालें।

1804 से लेकर 1813 तक काराज्योर्जे के नाम से पुकारे जाने वाले एक सूअर के व्यापारी के नेतृत्व में स्थानीय जैनीसेरी शासन के खिलाफ एक आंदोलन की शुरुआत हुई। सुल्तान का जैनीसेरी पर नियंत्रण समाप्त हो चुका था इसलिए वे इस आंदोलन के खिलाफ भी नहीं थे। यह आंदोलन नाम मात्र का राष्ट्रवादी था; और जब काराज्योर्जे ने बड़ी शक्तियों से मदद मांगी तो केवल रूस ने कुछ वित्तीय और सैनिक मदद की और सुलतान को संयम से काम लेने की सलाह दी। जैनीसेरी विद्रोहों और इस्तनबूल के उत्तराधिकार के संकट के

कारण विद्रोह सफल रहा। हालांकि 1813 में औटोमन साम्राज्य फिर से मजबूत हुआ और उसने काराज्योर्ज को भगा दिया जो भाग कर हंगरी चला गया था जहां उसके सर्बियाई साथी मिलोस ओबरनोविक ने उसकी हत्या कर दी। 1815 में मिलोस ने एक दूसरे विद्रोह का नेतृत्व किया और अपने को सुलतान का ईसाई पाशा घोषित किया। 1817 में उसने स्वयं को विशिष्ट व्यक्तियों की सभा द्वारा अनुवांशिक राजकुमार नियुक्त करवा लिया। सुलतान ने उसे साम्राज्य में एक अधीनस्थ राजकुमार के रूप में स्वीकार कर लिया।

मुख्यतः औटोमन राज्य के विध्वंसक सर्बियन राज्य की शुरुआत, जो बाद में युगोस्लाविया के रूप में विकसित हुआ, औटोमन साम्राज्य के पतन और राष्ट्रवादी लामबंदी के कारण हुई। तत्पश्चात बड़ी शक्तियों ने हस्तक्षेप किया। इस प्रकार 1820 और 70 के बीच राष्ट्रीय जागरूकता पैदा हुई। इसके लिए अतीत की महानता को लेकर ऐतिहासिक शोध किए गए और लोक संस्कृति को बढ़ावा दिया गया और वुक कराडजिक के साहित्यिक भाषा के सुधारों और उसके द्वारा सर्बियाई व्याकरण और शब्दकोश के निर्माण से भी इस जागरूकता में बड़ी मदद मिली।

इसके बाद बड़ी शक्तियों ने हस्तक्षेप करना शुरू किया। सबसे पहले रूस सर्बिया की ओर से आकृष्ट हुआ। सर्बिया बालकन क्षेत्र में रूस के लिए बहुत उपयोगी था और यहां पर पैर जमा कर हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्य पर दबाव बनाया जा सकता था। सर्बिया के खास संदर्भ में हैब्सबर्ग औटोमन साम्राज्य को धीरे-धीरे छोटा करना चाहता था और क्रोयेशियाई, बोसनिया और हर्जिगोबिना को उससे अलग करना चाहता था। सर्बिया का अपना हित पूरब की ओर मेसीडोनिया में और दक्षिण की ओर अल्बेनिया में विस्तार करने में था जिसके लिए शासक समय-समय पर ओटोमन साम्राज्य के खिलाफ सर्ब-ग्रीक-बुल्गारिया संधि करते रहे थे। ग्रीस की तरह सर्बिया भी अपने राज्य-क्षेत्र को लेकर असंतुष्ट था। परंतु ग्रीस से भिन्न कम से कम यहां देशी राजवंश ओबरेनोविक का शासन तो था। औटोमन शक्ति को इतनी निर्ममता से सर्बिया से निकाल दिया गया कि 1867 तक बेलग्रेड में उसके ध्वज के सिवा कुछ भी नहीं बचा। 1877-78 के रूस तुर्की युद्ध में औटोमन साम्राज्य की पराजय और 1878 में बर्लिन सम्मेलन के निर्णयों के बाद सर्बिया अन्ततः पूर्णतः स्वतंत्र हो गया।

19.3.3 रोमानिया

15वीं शताब्दी के अंत में रोमानिया औटोमन साम्राज्य का एक प्रमुख प्रांत था। मोल्डेविया और वालेशिया इसके दो अंग थे जिन्हें डैन्यूबियन प्रांत के नाम से जाना जाता था जो 1859 में जाकर रोमानिया के रूप में एकीकृत हुए। यह एक विशिष्ट राजवंशीय साम्राज्य था जहां स्थानीय धर्म, रीति रिवाज और यहां तक कि देशी राजकुमार शासन करते थे। परंतु वे औटोमन नियंत्रण के अधीन थे। 1634 और 1711 के बीच इस प्रांत में कई ग्रीक राजवंशों ने शासन किया। परंतु पूरी 18वीं शताब्दी में औटोमन केंद्र के लगातार पतन और रूसी शक्ति के आगे बढ़ने से यूरोपीय प्रांत रूसी संरक्षण में आ गए और 1769 से यहां रूस का अधिपत्य हो गया। स्थानीय राष्ट्रवाद रूसी प्रदेश आस्ट्रिया द्वारा इसे नियंत्रित करने के प्रयास औटोमन द्वारा दोनों के बीच संतुलन बनाने के प्रयास ने मिलजुल कर रोमानिया राष्ट्र के उदय की पृष्ठभूमि तैयार की। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में 'राष्ट्रीय पुनर्जागरण' हुआ। *डासिया लिटेरारा* पत्रिका के सम्पादक मिहेल कोगलनिसेनु (1840) ने रोमानिया का राष्ट्रीय इतिहास लिखा। ग्रीगोर एलेक्जेन्डरस्क ने स्वच्छंदतावादी साहित्य की रचना की। 1833 में वालेशिया में सबसे पहले रोमानिया का समाचार पत्र प्रकाशित हुआ और उसके बाद बुखारेस्ट में पहली राष्ट्रीय नाट्यशाला स्थापित की गई। 17वीं शताब्दी में धार्मिक ग्रंथों और उपासना ग्रंथों का अनुवाद रोमानियाई भाषा में शुरू हुआ जो 19वीं शताब्दी में जाकर पूरा हुआ। 1865 में स्वतंत्र रोमानियाई कट्टरपंथी चर्च की अपने धर्माध्यक्ष के साथ स्थापना हुई। यहां तक कि आस्ट्रियाई-हंगेरियाई साम्राज्य में रोमानियाई कट्टरपंथी ईसाई धर्म पर इसका वर्चस्व स्थापित हो गया था। यह एक ग्रीक विरोधी कदम था; बुल्गेरिया में भी ठीक ऐसा ही हुआ था। राजनैतिक राष्ट्रीय आंदोलन के लिए सांस्कृतिक आधार निर्मित किए गए; अब इनका उपयोग बड़ी शक्तियों द्वारा किया जाना था।

1774 में कुचुक कचारिया की संधि के बाद रूसी प्रभाव [illegible] से बढ़ा। 1828 और 18[illegible] [illegible] जब रूसी गवर्नर पैवेल किसलेव ने आधुनिक राज्य की नींव रखी [illegible] समय इन प्रांतों पर रूसी [illegible] था। इसके बाद यह नाममात्र को औटोमन का राज्य क्षेत्र रहा। परंतु [illegible] पर रूस का प्रभावी नियंत्रण था। [illegible]

एक विकट समस्या आ गई थी। यदि वह राष्ट्रवाद का समर्थन करता तो इस्तनबूल के खिलाफ उपयोगी होता परंतु यह स्वयं उसके लिए भी खतरनाक होता। इस प्रकार 1848-49 के क्रांतिकारी वर्ष में रूस ने दोनों ही प्रांतों में राष्ट्रीय आंदोलनों को दबा दिया । हालांकि नेपोलियन तृतीय के नेतृत्व में फ्रांस ने सब जगह राष्ट्रीय आंदोलनों को समर्थन प्रदान किया ताकि बहु-राष्ट्रीय साम्राज्य कमजोर हो सके और फ्रांस का प्रभाव बढ़ सके। क्रिमिया की हार के बाद रूस ने फ्रांस के अनुरोध पर इन दोनों प्रांतों का एकीकरण स्वीकार कर लिया, एलेक्जेंडर कूजा के अधीन रोमानिया नाम का एक राज्य बनाया गया जिसका चुनाव दोनों प्रांतों की राष्ट्रीय सभाओं द्वारा किया गया। उसके उग्र सुधारवादी कदमों के कारण बोयर के नाम से जाने जानेवाले आभिजात्य वर्ग ने 1866 में उसे अपदस्थ कर दिया; और बालकन के ढंग से ही होहेनजोलेर्न राजवंश के कैरोल जर्मन युवराज को राजा के रूप में चुना। बर्लिन सम्मेलन के बाद 1878 में रोमानिया को स्वतंत्र घोषित किया गया। राष्ट्रीय दृष्टि से आगे का इतिहास बालकन के अन्य क्षेत्रों के समान ही उतार चढ़ाव से परिपूर्ण था। आसपास के इलाकों को या तो खोना पड़ा या नए इलाके प्राप्त किए गए; ट्रैन्सिलवेनिया (हंगरी के साथ विवाद का क्षेत्र), बेसरबिया (सोवियत संघ का मोल्डेविया), बुकोविना और अंततः डोब्रुजा (बुल्गारिया के साथ विवाद का क्षेत्र) ऐसे ही क्षेत्र थे।

19.3.4 बुल्गारिया

बुल्गारिया सत्ता-केंद्र के नजदीक था अतः राष्ट्रवादी आंदोलन पहले शुरू होने के बावजूद यहां स्वतंत्रता अधिक धीमी गति से मिली। राष्ट्रवादी आंदोलन की शुरुआत वस्तुतः माउंट एथोस पर स्थित शिलेंदर (खिलेंदर) मठ के फादर पैसी ने 1762 में स्लावो-बुल्गारियाई इतिहास लिखकर की थी। यह एक स्वच्छंदतावादी और राष्ट्रवादी इतिहास था जिसमें बुल्गारियावासियों से विदेशी वस्तुओं को त्यागने का आह्वान किया गया था। इसके बाद 1806 में वृत्स के बिशप सोफ्रोनी ने *संडे बुक* लिखकर इस परंपरा को आगे बढ़ाया; यह बुल्गारिया भाषा में पहली मुद्रित पुस्तक थी। वैयाकरण रिलस्की ने 1835 में पहला आधुनिक बुल्गारियाई स्कूल खोला। इसके बाद जल्द ही एन-गेरोव ने पहला बुल्गारियाई शब्दकोश बनाया और वाइ. वेनेलिन, वी. रिलोव और आर. वोगोर्व ने पुरातत्व विषयक पुस्तकें लिखीं। इस अर्ध शताब्दी के दौरान इतिहास, लोक साहित्य और भाषा शास्त्र के जरिए 'राष्ट्रीय जागरूकता' को पनपने का मौका मिला। 1870 तक 2000 स्कूल खोले गए जिनमें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी। इसके अलावा पत्रिकाएं, वाचनालय, नाट्यशाला, सम्मेलन और सामाजिक समारोह आयोजित किए गए। इन सबने मिलकर नई चेतना का संचार किया। यह प्रक्रिया अपने उत्कर्ष पर पहुंच गई जब 1870 में सुल्तान ने बुल्गारिया को इसके अपने धर्माध्यक्ष, जिसे एक्सार्ख कहा जाता था, के साथ इस्तनबूल में स्वतंत्र चर्च प्रदान किया और उसे ग्रीक धर्माध्यक्ष से मुक्त किया। खासकर मेसीडोनिया में चर्च एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक ताकत थी; परंतु सुल्तान द्वारा इसे मंजूरी दिए जाने का ग्रीकों ने जमकर विरोध किया।

हालांकि 18वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में स्वतंत्रता के लिए कोई आंदोलन नहीं हुआ और अधिकांश लोग 1817 में सर्बिया में मिलोस आब्रेनोविक द्वारा अपने को पाशा घोषित किए जाने के तर्ज पर ईसाई पाशा के नेतृत्व में साम्राज्य के राष्ट्रीय बुल्गारियाई प्रांत के गठन के बारे में सोच रहे थे। क्रीमिया युद्ध (1854-1856) के बाद स्वतंत्रता की मांग ने जोर पकड़ा। जी.एम. राकोव्स्की और ल्यूबेन करावेलोव ने इसका प्रतिनिधित्व किया था। स्वभावतः, रूस ने स्लाविक राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया; इसी प्रकार इस्तनबूल ने इस राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया क्योंकि यह ग्रीकों के विरुद्ध था और उसने 1870 में बुल्गारियाई चर्च को उसका अपना धर्माध्यक्ष प्रदान कर इसे खासतौर पर बढ़ावा दिया। रूस ने बालकन क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए सर्बिया की ओर देखा; परंतु राजकुमार मिलान के नेतृत्व में जब सर्बिया को 1876 में हुए युद्ध में औटोमन से हार माननी पड़ी तो रूस निराश होकर बुल्गारिया की ओर बढ़ा। रूसी अखिल स्लावियाई भावना ने बालकन क्षेत्र की आजादी के लिए रूस को अगुवाई करने का मौका दिया; इसी प्रकार उदारवादी राजनीतिज्ञ और कई बार प्रधानमंत्री रह चुके विलियम ग्लैडस्टोन ने 1875 में बुल्गारिया के विभिन्न आंदोलनों को तुर्कों द्वारा दबाए जाने के खिलाफ ब्रिटिश जनमत को उद्‌बुद्ध किया। इसके परिणामस्वरूप 1877-1878 में रूस और तुर्की के बीच युद्ध हुआ और स्वतंत्र बुल्गारिया का निर्माण हुआ। परंतु ग्रीस के समान रूस के प्रभाव की आशंका के कारण 1878
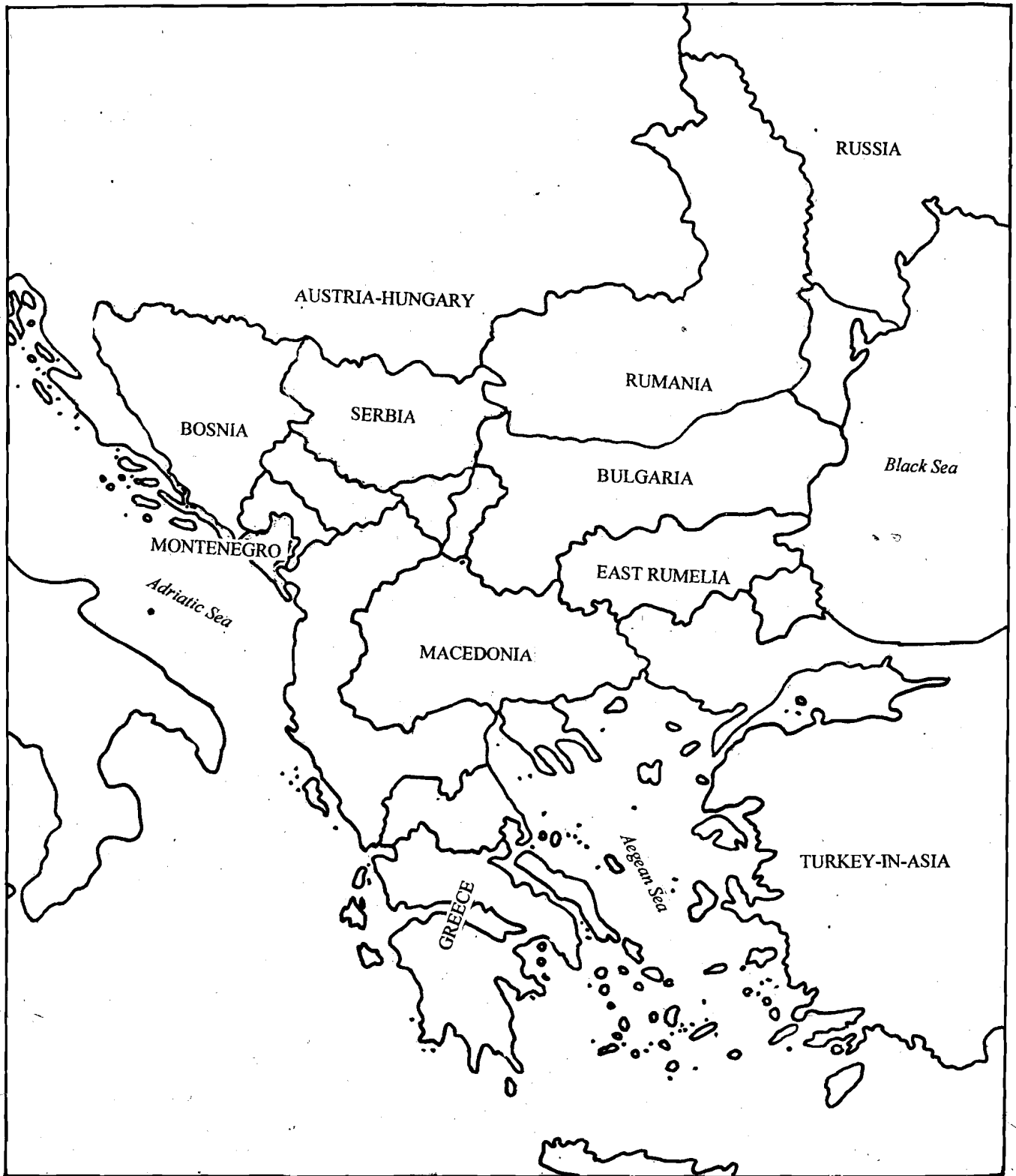
मानचित्र 4: बालकन्स

मानचित्र 5: बाल्कन और आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य

में बर्लिन सम्मेलन हुआ और यहां बुल्गारिया का विभाजन कर दिया गया। बुल्गारिया को तोड़कर एक नए राज्य पूर्वी रूमेलिया का निर्माण किया गया और यहां भी उन्होंने बुल्गारिया पर एक जर्मन राजकुमार, बेटेनबर्ग के एलेक्जेंडर को गद्दी पर बैठा दिया।

जैसा कि हमेशा होता आया है बड़ी शक्तियों ने हमेशा राष्ट्रवाद का अपने हित में उपयोग करना चाहा है पर उनकी यह मनोकामना पूरी नहीं हो सकी है। हां, इतना जरूर है कि इससे उन्होंने पूर्वी रूमेलिया जैसे अस्थिर राज्य कायम किए। बुल्गारिया का शासन चलाने के लिए रूस रियायतें मांगने लगा; और आरंभ में बुल्गारिया के राष्ट्रवाद को समर्थन देने के बावजूद उसने बुल्गारिया और पूर्वी रूमेलिया के एकीकरण पर आपत्ति उठाई। ब्रिटेन ने यह जानकर इस एकीकरण का समर्थन किया कि राष्ट्र-राज्य अपनी नई-नई प्राप्त स्वतंत्रता का हक मांगने लगते हैं और कठपुतली बनने से इनकार कर देते हैं; रूस को भी इसी बात का डर था। 1885 में जब एलेक्जेंडर ने संघ को आगे बढ़ाने की कोशिश की तो रूसी नाराजगी के कारण उसे अपनी गद्दी से हाथ धोना पड़ा। एक बार फिर बाल्कन में अधूरा राष्ट्रवाद स्वरूप ग्रहण करने लगा। बुल्गारिया की सभा ने डेनिश राजकुमार वाल्मेदर के पक्ष में मत दिया, जबकि रूसी सम्राट एलेक्जेंडर III ने इसे खारिज कर दिया। इस बार सभी ने एक जर्मन राजकुमार, सैक्सेकोबर्ग के फर्डिनैंड को चुना, जो आम सहमति से तीस वर्षों तक गद्दी पर कायम रहा। 1912-13 के बाल्कन युद्धों से बुल्गारिया फैलता और सिकुड़ता रहा; परंतु प्रथम विश्व युद्ध में उसने गलत पक्ष का साथ दे दिया और विजेताओं ने 1919 में उसे दंडित किया: उसकी क्षेत्रीय सीमा को कम कर दिया गया और एजेन समुद्र की ओर निकलने का मार्ग भी बंद कर दिया गया। एक बार फिर यह देखा गया कि एक ओर बहु-राष्ट्रीय साम्राज्य क्षीण हो रहा था और उसके ऊपर एक राष्ट्र-राज्य का निर्माण हो रहा था; परंतु इसकी सीमाएं अभी भी बड़ी शक्तियों के नियंत्रण में थी।

बोध प्रश्न 1

1) औटोमन साम्राज्य के पतन के कारणों का उल्लेख कीजिए। 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

2) सर्बिया और रोमानिया की स्वतंत्रता से जुड़ी परिस्थितियों पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

3) ग्रीस और बुल्गारिया ने एक दूसरे से भिन्न किस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्त की ?

....

....

....

....

....

19.4 हैब्सबर्ग राजतंत्र

हैब्सबर्ग राजतंत्र यूरोप का सबसे प्राचीन साम्राज्य था और यह यूरोप के मध्य में स्थित था; यह औटोमन के समान बहु-राष्ट्रीय था और इसकी समस्याएं समान थीं। हैब्सबर्ग एक राजवंश था जिसे हैप्सबर्ग भी उच्चरित किया जाता था; परंतु परिवार का मुखिया प्रत्येक राज्य, ड्यूक, प्रांत या काउंटी के लिए अलग-अलग उपाधि रखता था; और वह इन सभी क्षेत्रों में एक संप्रभु के रूप में अलग-अलग हैसियत से शासन करता था। उसे इलेक्टर (चुनाव करने वाले) कहे जाने वाले जर्मन राजकुमारों के एक समूह द्वारा रोम का राजा चुना जाता था, और फिर वह होली (पवित्र) रोमन सम्राट की पदवी धारण कर लेता था। अतः जिन क्षेत्रों पर उसका शासन था उसे होली रोमन साम्राज्य के नाम से जाना जाता था हालांकि इसमें रोमन जैसा कुछ भी नहीं था। नेपोलियन के हाथों पराजय के बाद 1806 में यह साम्राज्य समाप्त कर दिया गया; परंतु उस समय के सम्राट फ्रैंसिस II ने, घटना का पूर्वानुमान लगाते हुए, खुद ही आस्ट्रिया के अनुवांशिक सम्राट की पदवी ग्रहण कर ली। इस प्रकार 19वीं शताब्दी के आरंभ से राजतंत्र को परिभाषित करने के लिए हैब्सबर्ग साम्राज्य या राजतंत्र, आस्ट्रियाई साम्राज्य, आस्ट्रो- हंगेरियाई राजतंत्र या द्वैध राजतंत्र जैसे परंपरागत पर्यायों का इस्तेमाल किया गया।

19.4.1 साम्राज्य के भीतर अन्तरविरोध

राजवंश और इनका प्रधान इन विषमतापूर्ण भूमि-क्षेत्रों को जोड़नेवाला एक मात्र कारक था। इसके अलावा जर्मन राजवंश का शासन होने के कारण नौकरशाही, सेना और जर्मन संस्कृति भी इनसे जुड़ी हुई थी। जीवन में सफल होने के लिए जर्मन राष्ट्रीयता का होना जरूरी नहीं था, परंतु इसके लिए जर्मन भाषा पर अधिकार आवश्यक था। सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से जर्मन अधिक विकसित थे और वे बड़े पदों पर आसीन थे; परंतु उन्होंने ऐसा गैर-जर्मनों पर वर्चस्वादी जर्मन के रूप में नहीं बल्कि *स्टैट्सवोल्क* या ''राज्य की प्रजा'' बनकर किया। जर्मन संस्कृति में ढला एक चेक, हंगेरियाई या क्रोट समान रूप से बिना किसी भेदभाव के उच्च पदों पर पहुंच सकता था। इसी प्रकार हंगरी में, जहां माग्यारों का वर्चस्व था, एक गैर- माग्यार भी बिना किसी भेदभाव के उच्च पदों पर जा सकते थे या किसी भी क्षेत्र में तरक्की कर सकते थे। ग्रीकों के साथ भी ऐसा ही हुआ था जो पूरे औटोमन साम्राज्य में उच्चस्थ पदों पर छा गए। इसी प्रकार बाल्टिक जर्मन रूसी साम्राज्य में बहुत सफल रहे। ये प्रक्रियाएं पूर्व-राष्ट्रीय या गैर-राष्ट्रीय राजनैतिक ढांचों की खास विशेषताएं थीं; परंतु राष्ट्रवाद ने निर्ममता से इन सबको ध्वस्त कर दिया।

औटोमन साम्राज्य के समान इस राजतंत्र की एकता को भी दो प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। क्षेत्रीयतावाद पहली चुनौती थी जो परम्परागत थी और मध्य काल से चली आ रही थी। विभिन्न क्षेत्र राजा की केंद्रीय शक्ति के खिलाफ क्षेत्रीय विशेषाधिकार या विशेष संविधान का दावा करते थे। वे कराधान, सेना में नौकरी, धार्मिक अधिकार, किसानों पर जमींदारों के आधिपत्य और शहरों तथा व्यापारियों के अधिकारों जैसे सामान्य मुद्दे उठाते थे। ये समूह राजा से कुछ पाने के लिए उनके आगे-पीछे किया करते थे। इसका फायदा उठाकर राजा उन्हें एक दूसरे से लड़ाता था और अपनी गद्दी सुरक्षित रखता था। इसलिए हमेशा संबंधों का समीकरण बदलता रहता था, मोल-भाव होता रहता था और प्रत्येक राज्यारोहण और उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर नई 'सौदेबाजी' होती थी। राजवंशीय क्षेत्रीयतावाद में राजा सर्वेसर्वा था और वह एक खास ऐतिहासिक क्षेत्र का स्वतंत्र संप्रभु शासक होता था; जैसे बोहेमिया राज्य-क्षेत्र (बोहेमिया, मोराविया, सिलोसिया), हंगेरियाई राज्य क्षेत्र (हंगरी, स्लोवाकिया, ट्रान्सिलवैनिया, क्रोएशिया के हिस्से और सर्बिया) और पुश्तैनी क्षेत्र (ऊपरी और निचला आस्ट्रिया, कैरिन्थिया, कैरनिओला, लिट्टोरल, स्टिरिया, और टिरोल-वोरारलबर्ग), या गैलिशिया-बुकोविना। इस आधार पर और पृथक क्षेत्रीय निष्ठाओं के कारण राजा के नेतृत्व में एकता स्वीकार्य थी। परंतु इस प्रकार की व्यवस्था में कोई एकरूपता नहीं थीः एकरूपता स्थापित करने के प्रयत्नों के कारण राजा के प्रति क्षेत्र विशेष के ऐतिहासिक संबंधों पर असर पड़ता और राजतंत्र के अधीन एकता भी खतरे में पड़ती।

1830 और 1840 के दशक में उभर रहा राष्ट्रवाद दूसरी समस्या थी। प्रत्येक राष्ट्रीयता में विशेष अधिकारों

की मांग की गई। सबसे पहले एक भाषा और संस्कृति के संरक्षण और विकास, फिर किसी खास क्षेत्र पर भाषाई और सांस्कृतिक एकाधिकार जिसे उसके इतिहासकार उस संस्कृति के साथ जोड़ते और मांगते थे और अंततः संप्रभु राज्य के अधिकार की मांग की जाती थी। प्राचीन विशेषाधिकारों या प्रत्यक्षतः वर्ग से इसे कुछ लेना-देना नहीं था। सम्राट समूहों को तो एक दूसरे से आसानी से लड़ा सकता था पर राष्ट्रों के साथ वह आसानी से खेल नहीं खेल सकता था। आश्रय की राजनीति छोड़कर वह भी राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने लगता था और अंततः राजतंत्र समाप्त हो जाता था। राष्ट्रवाद में राजा के लिए गुंजाइश नहीं थी क्योंकि राष्ट्रवाद की परिभाषा में वह प्रत्येक राष्ट्रीयताओं के परिप्रेक्ष्य में विदेशी होता था। राजा संस्कृति से जर्मन था परंतु वह जर्मनों के लिए भी अंशतः विदेशी होता जा रहा था क्योंकि उसने अपनी राजवंशीय विरासत में गैर जर्मन राज्य क्षेत्रों को भी शामिल किया था जो जर्मन राष्ट्रवादी मानदंड का उल्लंघन था। अतः वे जर्मन साम्राज्य को अपने नए राष्ट्र के रूप में देख रहे थे। अतः यहां तक कि राजा के अधीन बना परिसंघ भी कारगर नहीं था। अब केवल युगोस्लाव और सोवियत जैसी व्यवस्थाएं चल सकती थीं जहां राष्ट्रवाद के आधार पर परिसंघ बनाया जा सकता था। परंतु परिसंघ बनानेवाला दर्शन भी आधुनिक और गैर राष्ट्रवाद के अनुकूल होना चाहिए; वंशीय व्यवस्था स्पष्ट रूप से इसके लिए उपयुक्त विचारधारा नहीं थी।

परिणामस्वरूप अपने प्रति लोगों को निष्ठावान बनाए रखना राजा की एक रणनीति थी। इसके लिए उसने सभी क्षेत्रों से अलग संबंध बनाए और उनकी संप्रभुता कायम रखी। परंतु इससे पुरानी शक्ति संरचनाओं तथा विशेषाधिकारों को कायम रखना पड़ा, कई प्रकार की क्षेत्रीय प्रशासन व्यवस्थाएं कायम हो गईं जिनमें कोई एकरूपता नहीं थी, करों का असमान वितरण था, सेना को अलग-अलग पारिश्रमिक दिया जाता था आदि। इस प्रकार की हास्यास्पद विविधता का सबसे बड़ा उदाहरण अंतिम राजा फ्रैंसिस जोसेफ (1848-1916 तक शासन किया) था जिसके बारे में कहा जाता था कि वह उन्नीस भाषाएं बोलता था परंतु कोई भी भाषा ठीक ढंग से नहीं बोल पाता था। संक्षेप में केंद्रीकरण और समरूपीकरण द्वारा राज्य के आधुनिकीकरण के प्रयास को अवरूद्ध कर दिया गया। आधुनिकता की दौड़ में पीछे रह जाने के कारण अन्तरराष्ट्रीय युद्धों में उनकी हार हुई और अन्य शक्तियों ने उन्हें छिन्न भिन्न कर दिया गया। औटोमन साम्राज्य के समान राजतंत्र का भी पतन हो गया।

इसलिए सम्राट ने केंद्रीकरण की नीति अपनाई। परंतु इसके लिए परम्परागत क्षेत्रीयतावाद और आधुनिक राष्ट्रवाद दोनों पर आक्रमण करना पड़ा। यह मात्र एक प्रशासनिक प्रक्रिया थी जिसमें राजा के प्रति निष्ठा के अलावा कोई विचारधारा काम नहीं कर रही थी। राजा के प्रति निष्ठा अपने आप में क्षेत्रीयतावाद की एक पुरानी विचारधारा थी जिसे केंद्रीकरण ने समाप्त कर दिया था। अतएव केंद्रीकरण की इस रणनीति में पूर्णतः अंतर्विरोध था, यह एकीकरण की एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसने एकता के आधार को ही नष्ट कर दिया। जैसा कि ऊपर बताया गया है, राजा के प्रति निष्ठा और आधुनिक राष्ट्रवाद परस्पर विरोधी थे। राष्ट्रवाद के लिए उपयुक्त केवल एक ही संभावित जोड़नेवाली विचारधारा थी और वह सबके लिए अत्यंत घातक थी; मसलन साम्राज्य पर जर्मन राष्ट्रवादियों (परम्परावादी नहीं) का आधिपत्य। चेक, स्लोवाक, माग्यार, क्रोएशियाई और सर्ब राष्ट्रवादियों के मद्देनज़र यह नामुमकिन था। अतएव राजतंत्र के लिए सभी मार्ग बंद हो गए, चाहे वह किसी भी रूप में हों, परम्परा या आधुनिकता, गैर-राष्ट्रीय या राष्ट्रवादी। इस स्थिति में उसने हर विकल्प या कई विकल्पों को मिलाकर आजमाया जबकि वह जानता था कि वह समय टाल रहा है; साम्राज्य का विघटन अवश्यंभावी है।

सम्राट द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर लोगों को आकृष्ट करने की शाही रणनीति चलती रही, परंतु वियेना ने दो बार केंद्रीकरण करने की कोशिश की और असफल रहा। पहले जोसेफ II (1780-1790) के शासन काल के दौरान यह प्रयास किया गया। वह ऊर्जावान और निर्मम आधुनिकतावादी था जिसने क्षेत्रीय विशेषाधिकारों को निर्ममतापूर्वक दबाकर सारी शक्ति अपने हाथों में केंद्रित कर ली। अपनी मृत्यु के पहले उसने अपनी सारी असफलता स्वीकार कर ली और अपने सुधार वापस ले लिए जबकि बेल्जियम (उस समय साम्राज्य का अंग) ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। 1848 की क्रांतियों पर विजय प्राप्त करने के बाद 1850 के दशक में एक नए चरण की शुरुआत हुई जिसकी शुरुआत मुख्य रूप से 1851 में सिल्वेस्टर पेटेंट के नाम से विख्यात राजाज्ञा से हुई। इस बार निरंकुशता और आस्ट्रिया के साथ गठबंधन लंबे समय तक चला। जर्मन केवल हंगरी

जैसे विद्रोही क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि ट्रान्सिलवेनिया और क्रोएशिया में भी प्रशासन और शिक्षा की भाषा बन गई; हंगेरियाई कानून को आस्ट्रिया कानून में मिला लिया गया; और कानून के समक्ष समानता (अर्थात शक्तिशाली लोगों के परम्परागत विशेषाधिकारों की समाप्ति) लागू की गई। परंतु यह क्षणिक गठबंधन था जो सोल्फेरिनो के युद्ध और इटली के एकीकरण के बाद 1860 में टूट गया। अक्टूबर डिप्लोमा (20 अक्टूबर 1860 के संवैधानिक दस्तावेजों की एक श्रृंखला) द्वारा 1848 के पहले के अधिकांश क्षेत्रीय ढांचों को बहाल कर दिया गया। हंगरी, ट्रान्सिलवेनिया और क्रोएशिया ने नई संवैधानिक शक्तियां, संसद (क्रोएशिया और साबोर में डायट) और सरकारें (चांसलरी) प्राप्त की। हालांकि 1848 से साम्राज्य की राजनीति ऐतिहासिक क्षेत्र की बजाए राष्ट्र के आसपास मंडराने लगी; और 1867 के बाद निश्चित रूप से संतुलन राष्ट्रवाद के पक्ष में हो गया। 1866 में, सैडोवा (कोनिग्ग्रैज) के युद्ध में हार के बाद राजतंत्र को एक और गहरा धक्का लगा। इस युद्ध में प्रशा के हाथों उसकी करारी हार हुई जो जर्मन राष्ट्र-राज्य, जर्मन साम्राज्य, स्थापित करने के मार्ग पर अग्रसर था। इससे हैब्सबर्ग की जर्मनी के नेतृत्व में बढ़ने की सारी आशाएं धूमिल हो गईं। 1867 में राजतंत्र को दो अलग इकाइयों, हंगरी और आस्ट्रिया (गैर- हंगेरियाई क्षेत्र सहित) में विभक्त कर दिया गया परंतु ये सम्राट और कुछ समान मंत्रालयों के जरिए आपस में जुड़े हुए थे। इसे द्वैध शासन के रूप में जाना जाता था; इससे आस्ट्रो-हंगेरियाई राजतंत्र के द्वैधपूर्ण शासन और बोझिल अधिकारिक समीकरण "साम्राज्यिक और राजकीय सरकार" (क्रमशः आस्ट्रिया और हंगरी के लिए) सामने आया। स्लावों को इससे गहरी निराशा हुई जो संघीय ढांचे में जर्मनों, माग्यारों और स्लावों की "तिक्कड़ी" की आशा लगाए बैठे थे। यह व्यवस्था 1918 तक जारी रही।

हैब्सबर्ग राजतंत्र की राष्ट्रीयताएं-1910

	राजतंत्र		अस्ट्रिया		हंगरी	
राष्ट्रीयता	लाख में	%	लाख में	%	लाख में	%
जर्मन	120.11	23.58	99.50	35.59	19.03	9.55
माग्यार	100.66	19.76	–	–	99.94	49.93
चेक	66.43	13.04	64.36	23.02	–	–
पोलिश	49.78	9.77	49.68	17.77	19.46	9.77
रूथेनियन	39.99	7.85	35.19	12.59	4.64	2.33
रोमानियन	28.88	5.67	2.75	0.98	29.48	14.80
क्रोट	32.25	6.33	–	–	16	8.03*
सर्ब	20.42	4.01	–	–	6.5	3.26*
सर्बो-क्रोट	–	–	7.88	2.82	4.62	2.32
स्लोवाक	19.68	3.86	–	–	–	–
स्लोवेन	13.71	2.69	12.53	4.48	–	–
इतालवी	7.71	1.51	7.68	2.75	–	–
मुस्लिम स्लाव	6.12	1.20	–	–	–	–
अन्य	3.68	0.72	–	–	–	–
कुल	509.42	99.99	279.57	99.98	199.17	99.99

* *क्रोएशिया-स्लावोनिया में क्रोट और सर्ब हैं। हंगरी में स्लाव अल्पसंख्यकों की संख्या छिपाने के लिए जनसंख्या गणना में माग्यार क्रोएशिया-स्लावोनिया को छोड़ देते थे।*

(स्रोत - एडवर्ड क्रैकशॉ, **द फॉल ऑफ द हाउस ऑफ हैब्सबर्ग,** स्फेयर बुक एडिशन, लंदन, 1970, पृष्ठ-437 प्रतिशत और योग नहीं दिया गया था: इसे इस इकाई के लेखक ने जोड़ा है।)

1867 के बाद, साम्राज्य में राष्ट्रवादी तनाव काफी बढ़ गया। यह तनाव ज्यादातर शिक्षा और प्रशासन के लिए भाषा की राजनीति के कारण पैदा हुआ। अलग-अलग ढंग से वे सभी माग्यार, चेक, स्लोवाक, क्रोट, सर्ब, स्लोवेन, रूथेन (उक्रेइयाइ), पोलिश, इतालवी और अन्ततः जर्मन में विभक्त हो गए। गैर-राष्ट्रीय साम्राज्य का सिद्धांत और प्रथा समाप्त हो गई। बहुत जल्द ही साम्राज्य के सामने ऐसी घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय समस्याएं आई जिससे साम्राज्य टूट गया। विदेशी शक्तियों ने आत्म निर्णय के नाम पर इसे विभाजित कर दिया क्योंकि सिद्धांत के रूप में इसे लागू करना आसान था।

औटोमन साम्राज्य के समान ही हैब्सबर्ग साम्राज्य का भी पतन हुआ परंतु दोनों के ढंग थोड़े-थोड़े अलग थे। औटोमन साम्राज्य के तोड़ने में बड़ी शक्तियों ने पहल की; राष्ट्रवाद बाद में आया और बड़ी शक्तियों ने भी इसका इस्तेमाल किया। हैब्सबर्ग भी इसी प्रक्रिया से गुजरा पर इसमें आडम्बर ज्यादा था और प्रथम विश्व युद्ध में हार के फलस्वरूप इसका पतन हुआ था। 19वीं शताब्दी में फ्रांसीसी आक्रमण के कारण इसे आरंभ में काफी नुकसान उठाना पड़ा। 1792 में फ्रांसीसी सेना ने बेल्जियम को कब्जे में कर लिया जो फिर हैब्सबर्ग के पास कभी नहीं जा सका। नेपोलियन की विजयों के बाद होली रोमन साम्राज्य समाप्त हो गया और 1806 में जर्मनी भी इसके हाथ से निकल गया। 1860 में इटली के एकीकरण को समर्थन देकर फ्रांस ने हैब्सबर्ग से इटली को भी अलग कर दिया। 1866 में, प्रशा ने अंतिम रूप से हैब्सबर्ग को जर्मन नेतृत्व से बाहर कर दिया। दूसरी ओर हैब्सबर्ग ने औटोमन साम्राज्य से पश्चिम बाल्कन में प्रमुख रूप से बोस्निया और हर्जेगोविना प्रांतों को हासिल कर लिया। परंतु हंगरी और चेकोस्लोवाकिया में राष्ट्रवादी दबावों के बावजूद प्रथम विश्व युद्ध में हुई हार के बाद ही साम्राज्य का पतन हुआ और विजयी शक्तियों ने चेकोस्लोवाकिया नाम के नए राष्ट्र का निर्माण किया। हंगरी में से गैर-माग्यारों को हटाकर, ट्रांस्लिवेनिया के साथ रोमानिया और दक्षिण स्लाव परिसंघ को युगोस्लाविया कहा गया और आस्ट्रिया कट छंट कर एक छोटा सा देश रह गया। यह प्रक्रिया औटोमन की अपेक्षा ज्यादा नाटकीय थी क्योंकि हैब्सबर्ग का केंद्रीय राज्य अधिक आधुनिक और प्रभावशाली था। यह बेहतर ढंग से स्थानीय राष्ट्रीयताओं और अन्तरराष्ट्रीय हस्तक्षेप को रोक सकता था। पहले की ही तरह अन्तरराष्ट्रीय शत्रुता ही निर्णायक सिद्ध हुई; और लगभग समान कारणों से औटोमन साम्राज्य की तरह हैब्सबर्ग साम्राज्य का पतन हो गया।

19.4.2 चेकोस्लोवाकिया

संभवतः पहली और प्रमुख राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में जो संस्कृति विकसित हुई वह चेक थी। बोहेमिया (चेक देश) के आभिजात्य वर्ग के संरक्षण में एक आधुनिक 'राष्ट्रीय' संस्कृति का निर्माण हुआ। डोब्रोवस्की और जंगमैन ने चेक भाषा का मानकीकरण और शुद्धिकरण किया तथा उसे विदेशी प्रभाव से मुक्त किया; जान कोलर (एक स्लोवियाई) जैसे स्वच्छंदतावादी रचनाकारों ने ***द डॉटर ऑफ स्लाव*** (1824) नामक महाकाव्य लिखा, पॉल सफारिक (यह भी स्लावियाई था) ने स्लाव भाषाओं का इतिहास संग्रहीत किया (1826) और फ्रैंटिसेक पालाकी ने अपना ***बोहेमिया का इतिहास*** नामक विशाल ग्रंथ तैयार किया। प्राग् राष्ट्रीय पुनर्जागरण का केंद्र था और सभी लोग चाहे वह चेक, स्लाव या जर्मन हों चेक भाषा में लिखा करते थे।

स्लोवाकों के बीच टकराव के दो अवसर आए-पहला, चेक-स्लोवाक भाषाई एकता का सवाल और दूसरा स्लोवाक राष्ट्रवाद का सवाल। आक्रबिशप रूडने ने चेक आधिपत्य से मुक्त होने और स्लोवाक बोलियों को स्वतंत्र भाषा के रूप में विकसित करने का आह्वान किया। अतः स्लोवाकों को स्लोवाक अस्मिता को परिभाषित करने में कुछ समस्याएं आई थीं। इस प्रकार 1918 में जो चेकोस्लोवाकिया स्थापित हुआ उसमें दो राष्ट्र थे। सोवियत संघ और युगोस्लाविया के तरह 1992 में चेकोस्लोवाकिया भी दो राष्ट्रों में विभक्त हो गया।

साम्राज्य के भीतर चेकोस्लोवाकिया कोई राजनैतिक क्षेत्र नहीं था। चेक, बोहेमिया इलाके में जिसमें बोहेमिया, मोराविया और सिलेसिया शामिल था, चेक बहुमत में थे। जर्मन और पोलिश अल्प मत में थे। स्लोवाक हंगेरियाई राज्य के उत्तरी हिस्से में रहते थे। चेकोस्लोवाकिया की आधुनिक राजधानी प्राग पूर्णतः जर्मन शहर था जो 19वीं शताब्दी के मध्य में औद्योगीकरण और चेक मजदूरों के देशांतरण के बाद पूर्णतः चेक बन गया। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में बोहेमिया इलाके पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए चेक और स्थानीय जर्मन संयुक्त रूप से अपने शाही केंद्र वियेना में रहते हुए अपनी डायटों (संसदों) में वाद-विवाद करते रहे। यह

मध्ययुगीन और परम्परागत क्षेत्रीयतावाद था। परंतु 1830 के दशक के बाद और खासकर 1848 और 1867 के बीच चेकों और जर्मनों में बोहेमिया इलाकों पर आधिपत्य जमाने के लिए होड़ शुरू हो गई। सार्वजनिक रूप से चेक और जर्मन भाषाओं के उपयोग को लेकर लोग एक दूसरे से टकराने लगे। इसके साथ-साथ चेकों ने वियेना से अधिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष छेड़ दिया। दूसरी ओर बोहेमिया के जर्मन अल्प संख्यकों ने जर्मन आधिपत्य स्थापित करने के लिए साम्राज्यिक केंद्र वियेना का समर्थन था। प्रशा के नेतृत्व में उभर रहे नए जर्मन राष्ट्रवाद में से एक का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की (जिन्होंने जर्मन साम्राज्य का निर्माण किया था।) अब दोनों ही राष्ट्रीयताएं चेक और जर्मन राष्ट्र-राज्य के आधार पर अपना हक मान रहे थे।

दूसरी ओर हंगेरियाई इलाके के भीतर स्लोवाकों को समानांतर संघर्ष चलाना पड़ रहा था। वे वियेना से मुक्त होना चाहते थे परंतु उनके लिए वियेना का मतलब केवल जर्मन नहीं था। वे हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट के नियंत्रणों का भी विरोध कर रहे थे। स्वाभाविक रूप से इस शताब्दी के पूर्वार्ध में बुडापेस्ट और वियेना के केंद्रीकरण के खिलाफ क्षेत्रीयता को बढ़ावा मिला। परंतु 1840 के दशक के बाद और खासकर 1860 के दशक के बाद स्लोवाक राष्ट्रवादी हंगरी के माग्यार राष्ट्रवादी केंद्रीकरण और स्लोवाकों के माग्यारीकरण के प्रयासों में बाधा पहुंचा रहे थे।

इस शताब्दी के अंत में चेक और स्लोवाक राष्ट्रवादों का मिलन हुआ और एक नए चेक स्लोवाक राष्ट्रवाद का उदय हुआ। इस विचार को प्रतिपादित करने के लिए 1896 में टी. जी. मसरिक के प्रेरणा से एक चेकोस्लोवाकिया समाज की स्थापना की गई। 1916 में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पेरिस में एक राष्ट्रीय परिषद की स्थापना की गई जहां मसरिक ने फ्रांसीसी नेतृत्व को यह समझाने की कोशिश की कि हैब्सबर्ग साम्राज्य के टूटने और राष्ट्रीय राज्यों तथा चेकोस्लोवाकिया के निर्माण से फ्रांसीसी सुरक्षा को मजबूती मिलेगी। फ्रांस और उनके सहयोगियों ने इस रणनीति को मंजूरी दे दी और 1918-19 के बीच नए राष्ट्र-राज्य बनाए गए। इस बार भी यूरोप में सैनिक पराजय और विजेताओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए गणनाओं के आधार पर राष्ट्र-राज्य व्यवस्था बनाई गई। सैनिक पराजय के बिना मध्य यूरोप में राष्ट्रीय इकाइयों से युक्त संघीय ढांचे का उदय हुआ होता जैसा कि सोवियत संघ, युगोस्लाविया और कुछ हद तक चेकोस्लोवाकिया में हुआ।

19.4.3 हंगरी

हंगरी के सम्राट के कब्जे वाले इलाके को आमतौर पर हंगरी के नाम से जाना जाता था। इसमें बहुसंख्यक और प्रबल माग्यार, रोमानियाइ (ट्रांस्लिवेनिया में जो 1919 में रोमानिया से होकर गुजरता था), उत्तर पश्चिम में स्लोवाक (जहां 1918 में चेकोस्लोवाकिया बना), दक्षिण और दक्षिण पश्चिम में सर्ब (जो 1919 के बाद युगोस्लाविया में मिल गए,) शामिल थे। इस प्रकार हंगेरिया हंगरी के सम्राट का इलाका बृहद हैब्सबर्ग राजतंत्र के अधीन खुद में एक बहु-राष्ट्रीय राज्य था (यह साम्राज्य नहीं था क्योंकि आस्ट्रिया का सम्राट हंगरी का केवल राजा था)। हंगेरियाई इलाके में माग्यारों का वर्चस्व था। इसलिए जब 1918 में राजतंत्रों का पतन हुआ तो अधिकांश माग्यार हिस्सों को काटकर दूसरे राष्ट्र-राज्यों जैसे चेकोस्लोवाकिया, रोमानिया, युगोस्लाविया में मिला दिया गया, और माग्यार राष्ट्र-राज्य, हंगरी को पीछे छोड़ दिया गया।

राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में माग्यारों को थोड़ी बढ़त मिल गई थी। फेरेंज केजिंजी ने भाषा का शुद्धिकरण कर दिया था, व्याकरण को तर्कसंगत बनाया था, शब्दावली का विस्तार किया था और आधुनिक साहित्य के फलने फूलने के लिए आधार तैयार किया था। 1792 के बाद ही डायट या संसद नियमित रूप से सार्वजनिक जीवन में माग्यार भाषा के व्यापक उपयोग की मांग करने लगे थे। 1825 में काउंट इस्तवान स्चेनेइ ने संस्कृति और विद्वता की विशिष्ट राष्ट्रीय संस्था हंगेरियाई अकादमी की स्थापना की। 1830 के दशक तक हंगेरियाई इलाकों के परम्परागत क्षेत्रीय विशेषाधिकारों को लेकर हंगरी और वियेना के बीच टकराव होता रहा। इसके बाद संसद (डयाट) पर उदारवादियों और राष्ट्रवादियों की नई पीढ़ियों ने कब्जा जमा लिया जिसके नेता लाजोस कोसुत थे और जिनका उद्देश्य राष्ट्रवाद की प्राप्ति था। 1840 के दशक से माग्यारीकरण अर्थात माग्यार भाषा के उपयोग को गैर-माग्यारों के ऊपर आरोपित किया गया। इसके विरोध और प्रतिक्रिया में स्लोवाकों, क्रोटों और रोमानियाइयों ने अपनी-अपनी भाषाओं के लिए आंदोलन किया।
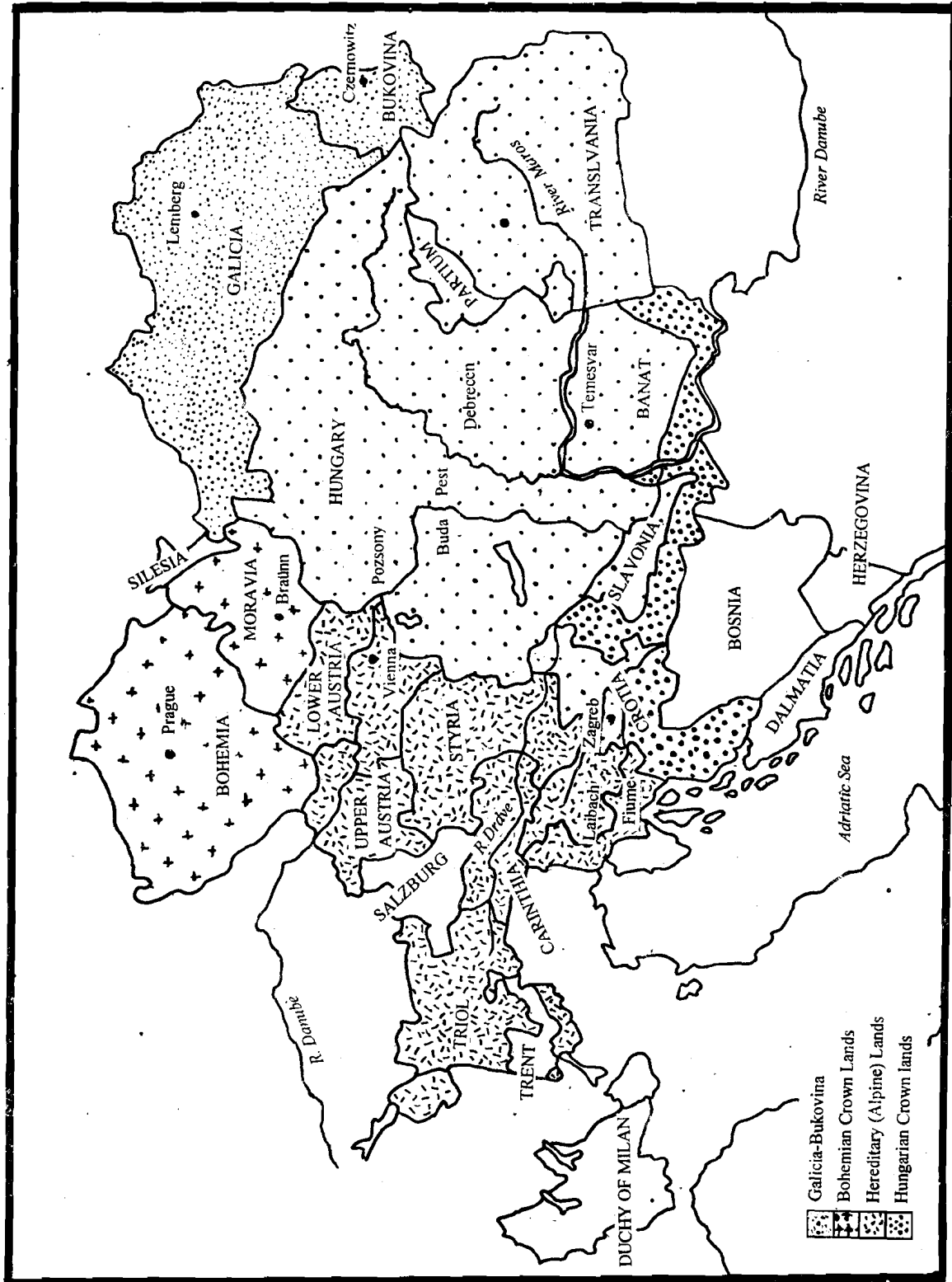
मानचित्र 6: 18वीं शताब्दी के अंत में हैब्सबर्ग राजतंत्र

यूरोप में 1848 में हुई क्रांतियों के दौरान इन राष्ट्रवादों की असल परीक्षा हुई। कोसुत के नेतृत्व में हुए हंगेरियाई राष्ट्रवादी आंदोलनों ने हंगरी पर नियंत्रण स्थापित करना चाहा, वियेना से मुक्त होने की कोशिश की और अपने को गैर माग्यारों पर आरोपित करने की कोशिश की। हालांकि स्लोवाकों और रोमानियों को हरा दिया गया, सर्ब और क्रोट पहले से ही संठित समुदाय थे और वियेना ने माग्यार के खिलाफ उनके राष्ट्रवाद का समर्थन करने का निर्णय लिया। इसलिए मार्च 1848 में कट्टर क्रुएशियाई जोसिप जेलासिस को क्रुएशिया का बैन (राज्यपाल) नियुक्त किया गया और माग्यारों को लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके बाद अपने मेट्रोपोलिटन विशप राजासिस के नेतृत्व में हंगरी के सर्बों ने एक 'राष्ट्रीय सम्मेलन' आयोजित किया और हैब्सबर्ग-राजवंश के अधीन अप्रैल 1849 में एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में 'हंगेरियाई सर्बों के राष्ट्र' की घोषणा की। इस प्रकार वियेना के समर्थन से क्रोट और सर्बों ने 1848-49 में माग्यारों के खिलाफ संघर्ष किया। अंत में 1849 में आस्ट्रिया का समर्थन करने के लिए आ रहे माग्यारों को रूसी सेना ने बुरी तरह परास्त कर दिया और कोसुत तुर्की भाग गया। वियेना माग्यार राष्ट्रवाद की चुनौती को टालने में सफल रहा लेकिन इससे सर्ब, क्रुएशिया और और राष्ट्रवादों को बढ़ावा मिला और साम्राज्य के राष्ट्रवादी पुनर्संगठन को वैधता प्राप्त हुई।

19.4.4 चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया – नए बहु-राष्ट्रीय राज्य

दोनों साम्राज्यों को इस आधार पर विभक्त कर दिया गया कि उन्होंने राष्ट्रवाद के सिद्धांत का उल्लघंन किया था। इसके बावजूद वर्साय में आयोजित हुए 1919 के शांति समझौने से दो महत्वपूर्ण बहु-राष्ट्रीय राज्यों चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया का जन्म हुआ।

चेकोस्लोवाकिया में उस समय 60 लाख चेक, 20 लाख स्लोवाक, 35 लाख जर्मन और 10 लाख माग्यार रहते थे; वहां की कुल जनसंख्या लगभग 1 करोड़ 20 लाख थी। जर्मन और चेकों तथा स्लोवाकों और माग्यारों के बीच राष्ट्रवादी घृणा के इतिहास के बावजूद जानबूझकर बहु-राष्ट्रीय राज्य का निर्माण किया गया। हालांकि हैब्सबर्ग राजतंत्र के राजवंशीय, ऐतिहासिक क्षेत्र और गैर-राष्ट्रीय एकता के पुरातन सिद्धांतों के बजाए राष्ट्रवाद की आधुनिक शक्ति को आधार बनाया गया। अपने निर्माण के समय से ही चेकोस्लोवाकिया संकट में पड़ा रहा। हालांकि इस प्रकार के राज्य आधुनिक राष्ट्रवाद के परिवेश में स्वीटजरलैंड के समान अन्तरराष्ट्रीय संरक्षण में ही फल-फूल सकते हैं; मसलन स्वीटजरलैंड त्रिराष्ट्रीय परिसंघ द्वारा संचालित होता था।

युगोस्लाविया की भी यही हालत थी। जैसे चेक और स्लोवाक राष्ट्रवादिता को चेकोस्लोवाकिया राष्ट्रवाद में मिला दिया गया उसी प्रकार सर्बियाई, क्रोएशियाई और सर्बो-क्रोट राष्ट्रवाद का विकास लगभग एक साथ हुआ था। 1830 और 1840 के दशक में जुडोविक गाज ने सभी दक्षिणी स्लावों को एकीकृत करने के लिए इलीरियानिस्ट आंदोलन चलाया था। इसके परिणामस्वरूप एकमात्र भाषा सर्बो क्रोट का निर्माण हुआ। दो पृथक राष्ट्रवाद पनपे, खासकर सर्बिया 1817 तक प्रभावी रूप में एक पृथक राज्य के रूप में मौजूद था। 1808 में जेरनेज कोपिटार, जो एक कवि और भाषाशास्त्री था, ने पहलो स्लोवेनी व्याकरण की किताब प्रकाशित की और लुब्लाना (जर्मन में लाइबाश) से पहला स्लोवेन भाषी समाचार पत्र 1843 में प्रकाशित हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में इससे स्लोवेन राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा मिला। इन तीनों राष्ट्रवादों और मौन्टेनिग्रो को मिलाकर दक्षिण स्लाव परिसंघ बना जिसे युगोस्लाविया के नाम से जाना गया। 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में सर्बिया में मौन्टेनिग्रो, डाल्मेशिया, बोस्निया, स्लोवेनिया और क्रोएशिया को मिलाकर युगोस्लाविया बना दिया गया। इनमें कुछ महत्वपूर्ण जुड़ाव थे और कुछ हद तक एक ढंग का राष्ट्रवाद भी था। परंतु कई पृथक राज्यों का भी जन्म हो गया जिसके कारण नए राष्ट्र-राज्यों का निर्माण आसान नहीं रह गया। यह राष्ट्रों का परिसंघ था जिसमें आन्तरिक शत्रुता गहराई में प्रविष्ट कर गई थी और कई स्तरों पर सर्बियाइयों का वर्चस्व क़ायम था। फिर भी यह 1990 तक कायम रहा।

बोध प्रश्न 2

1) हैब्सबर्ग साम्राज्य को एक साथ जोड़कर रखने में सम्राट ने क्या भूमिका निभाई ?

....

....

....

....

2) हैब्सबर्ग साम्राज्य के पतन में राष्ट्रवाद और युद्धों के महत्व पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

19.5 सारांश

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि आधुनिक अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली में गैर-राष्ट्रीय या राजवंशीय राज्य ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकते। राष्ट्रवाद को रोककर, दबाकर या अनदेखा कर हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्य ने जिन्दा रहने की कोशिश की। परंतु राष्ट्र-राज्य के निर्माण को वे रोक नहीं सके और खुद उनका पतन हो गया। यदि ऐसा न भी हुआ होता तो भी गैर-राष्ट्रीय-राज्य तो न ही बनते; हां, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया और सोवियत संघ जैसे और भी बहु-राष्ट्रीय राज्य बन सकते थे। आधुनिक राज्य राष्ट्रवाद के विकास के आधार पर ही टिक सकता था। एक राष्ट्र-राज्य के लिए एक राष्ट्रवाद और कई राज्यों को मिलाकर बहु राष्ट्र-राज्य का निर्माण हो सकता था। सिद्धांततः औटोमन और हैब्सबर्ग साम्राज्य, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लोवाक और सोवियत राज्यों जैसे बहु-राष्ट्रीय इकाइयों के रूप में विकसित हो सकते थे। परंतु ये दोनों राष्ट्र अन्तरराष्ट्रीय युद्ध में हार गए और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। इतिहास में पराजितों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता रहा है। इस मामले में विजेताओं ने साम्राज्य के टुकड़े-टुकड़े करने में राष्ट्रवाद के सिद्धांत का सहारा लिया। यह औजार उन्हें उस समय तैयार और प्रभावी रूप में मिल गया। परंतु वे एकमत पर टिके नहीं होते थे बल्कि अपनी सुविधाओं के अनुसार निर्णय लेते थे। इसलिए बाल्कन में सीमाओं का परिवर्तन होता रहा और चेकोस्लोवाकिया तथा युगोस्लावाक राज्यों का निर्माण भी यही साबित करता है। दोनों साम्राज्यों के पतन में राष्ट्रवाद के साथ-साथ सैनिक पराजय का भी हाथ था। सैनिक पराजय बताता है कि यह क्यों हुआ और राष्ट्रवाद यह बताता है कि यह किस रूप में हुआ।

19.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 19.3

2) देखिए उपभाग 19.3.2 और 19.3.3

3) देखिए उपभाग 19.3.1 और 19.3.4

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 19.4.1

2) देखिए उपभाग 19.4.1 और भाग 19.4 के अन्य उपभाग